

भारत टीबी रपिर्त, 2020

प्रलम्ब के लिये:

वर्षीय स्वास्थ्य संगठन, तपेदिक, डॉक्टरों व दवाओं, कोविड-19

मेन्स के लिये:

वैश्विक तपेदिक रपिर्त और स्वास्थ्य से संबंधित मुद्दे

चर्चा में क्यों?

‘डॉक्टरों व दवाओं’ (Doctors Without Borders) नामक एक गैर-सरकारी संगठन (NGO) के अनुसार, **COVID-19** महामारी ने तपेदिक (Tuberculosis) से निपटने के प्रतिअपनाई जाने वाली वैश्विक रणनीति को प्रभावित किया है।

प्रमुख बिंदु:

रपिर्त के बारे में:

- रपिर्त में भारत सहित 37 उच्च टीबी-बर्डन वाले देशों का डेटा प्रस्तुत किया गया है (वैश्विक अनुमानित टीबी के मामलों के 77% का प्रतिनिधित्व करते हुए)।
- रपिर्त में यह दर्शाया गया है कि राष्ट्रीय नीतियाँ ‘**वर्ल्ड स्वास्थ्य संगठन**’ (World Health Organisation- WHO) के दिशा-निर्देशों और सर्वोत्तम अंतरराष्ट्रीय प्रथाओं के साथ कसि हद तक संरेखित हैं।
- यह इस रपिर्त का **चौथा संस्करण** है, जो देशों की नीतियों और राष्ट्रीय टीबी कार्यक्रमों के 4 प्रमुख क्षेत्रों से संबंधित प्रथाओं पर केंद्रित है:
 - निदान (Diagnosis),
 - उपचार (Treatment) (देखभाल के मॉडल सहित),
 - रोकथाम (Prevention),
 - दवाओं की खरीद नीतियाँ।

रपिर्त संबंधी प्रमुख नषिकर्ष:

- जनि देशों में रपिर्त के लिये सर्वेक्षण किया गया है उन देशों में WHO की नीतियों को अपनाने और कार्यान्वयन में अनेक बाधाएँ पाई गईं।
- चिकित्सा क्षेत्र में हाल ही में कथि महत्वपूर्ण चिकित्सा नवाचारों तक बहुत कम लोगों की पहुँच सुनिश्चित हो पा रही है।
- टीबी रोग से ग्रसित तीन में से एक व्यक्ति को अभी भी अधिसूचित नहीं किया गया है और निदान की सुविधा उपलब्ध नहीं हो पाई है।
- सर्वेक्षण में शामिल लगभग तीन में से दो देशों द्वारा अपनी नीतियों में **एचआईवी** (human immunodeficiency virus) से ग्रसित लोगों में टीबी की जाँच के लिये मूल आधारित **TB lipoarabinomannan (TB LAM)** परीक्षण को शामिल नहीं किया गया है।

भारत के संबंध में:

- वर्षीयज्ञों के अनुसार, भारत **रोग प्रतिरोधक-TB (Disease Resistant-TB)** के लिये नई दवाओं के उपयोग के संबंध में अभी भी बहुत ही रूढ़िवादी दृष्टिकोण (Conservative Approach) का पालन कर रहा है।
- गैर-सरकारी संगठन ने टीबी के परीक्षण, उपचार और रोकथाम में तेज़ी लाने तथा नये चिकित्सा उपकरणों तक सभी की पहुँच सुनिश्चित करने के लिये वित्तीय सहायता प्रदान करने के लिये सरकारों से आह्वान किया है।
- इसके अलावा डब्ल्यूएचओ की एक रपिर्त के अनुसार, COVID-19 महामारी के दौरान TB के निदान कराने वाले लोगों की संख्या में तेज़ी से गिरावट देखी गई है।
- COVID-19 महामारी के दौरान जहाँ DR-TB ड्रग्स **बेदाक्वलिनि (Bedaquiline)** और **डेलमनीड (Delamanid)** के स्केलिंग नहीं करने पर भारत की आलोचना की गई है।

- **प्रीटोमोनीड (Pretomanid) DR-TB** के उपचार के लिये विकसित तीसरी नई दवा है।
- मार्च 2020 तक, भारत के MDR-TB के 10% से भी कम मरीजों को बेडाक्वलिनि की उपलब्धता सुनिश्चित हो पाई। यह एक चिंताजनक वषिय है, क्योंकि दुनिया के कुल DR-TB रोगियों में से एक चौथाई भारत में है।
- भारत में दुनिया में सबसे ज्यादा टीबी रोगी है। वर्ष 2018 में कुल 2.15 मिलियन टीबी मामले रपॉर्ट किये गये, जो वर्ष 2017 की तुलना में 16% अधिक है।

टीबी से लड़ने के लिये भारत की पहल:

राष्ट्रीय क्षय रोग उन्मूलन कार्यक्रम:

- टीबी पर नियंत्रण के लिये भारत सरकार ने वर्ष 1962 से राष्ट्रीय क्षय नियंत्रण कार्यक्रम लागू किया। इसके अंतर्गत ज़िला स्तर पर एक सुपरविज़न एवं मॉनिटरिंग इकाई के रूप में ज़िला क्षय निवारण केंद्र की स्थापना की गई।

वर्ष 2025 तक टीबी को खत्म करना:

- भारत वर्ष 2025 तक देश से क्षय रोग (टीबी) को खत्म करने के लक्ष्य के लिये प्रतिबद्ध है। यह विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा निर्धारित समय सीमा (वर्ष 2030) से आगे है।

नक्षय इकोसिस्टम (The Nikshay Ecosystem):

- नक्षय इकोसिस्टम जो एक राष्ट्रीय टीबी सूचना प्रणाली है और रोगियों की जानकारी का प्रबंधन और कार्यक्रम की गतिविधियों की निगरानी के लिये वन स्टॉप सॉल्यूशन है।

नक्षय पोषण योजना (Nikshay Poshan Yojana):

- टीबी रोगियों को पोषण संबंधी सहायता प्रदान करने के लिये अप्रैल 2018 में नक्षय पोषण योजना, एक प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण योजना की शुरुआत की गई है। इस योजना के तहत टीबी रोगियों को उपचार की पूरी अवधि के लिये प्रतिमाह 500 रुपये मिलते हैं।

टीबी हारेगा देश जीतेगा अभियान:

- वर्ष 2019 में 'टीबी हारेगा देश जीतेगा अभियान' (TB Harega Desh Jeetega Campaign) की शुरुआत की गई है जो देश में टीबी के उन्मूलन से संबंधित कार्यक्रम है।

सक्षम परियोजना (The Saksham Project):

- टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज (Tata Institute of Social Sciences) द्वारा DR-TB रोगियों को मनो-सामाजिक परामर्श प्रदान करने के लिये सक्षम परियोजना शुरू की गई है।
- भारत सरकार ने देश भर में एक नज़ी क्षेत्र के कार्यक्रम **JEET (Joint Effort for Elimination of TB)** को शुरू करने के लिये ग्लोबल फंड के साथ भागीदारी की है।

वैश्विक प्रयास:

- विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) ने ग्लोबल फंड और स्टॉप टीबी पार्टनरशिप के साथ एक संयुक्त पहल **"शोध. उपचार. सर्व. #EndTB" (Find. Treat. All. #EndTB)** शुरू की है, जिसका उद्देश्य टीबी प्रतिक्रिया को तेज करना और देखभाल तक पहुंच सुनिश्चित करना है, जो डब्ल्यूएचओ के यूनिवर्सल हेल्थ कवरेज की ओर समग्र ड्राइव के अनुरूप है।

WHO वैश्विक तपेदिक रपॉर्ट भी जारी करता है।

आगे का रास्ता

- विभिन्न कार्यक्रमों द्वारा प्राप्त उल्लेखनीय सफलताओं के बावजूद, शीघ्र और सटीक निदान में सुधार के लिये मज़बूत प्रयासों की आवश्यकता होती है, जिसके बाद एक त्वरित उपयुक्त उपचार होता है जो टीबी को समाप्त करने के लिये महत्वपूर्ण है।

भारत को वैश्विक प्रयासों में सहयोग करना चाहिये जो टीबी को खत्म करने के लिये किये जा रहे हैं।

टीबी/क्षय:

- टीबी या क्षय रोग बैक्टीरिया (माइकोबैक्टीरियम ट्यूबरकुलोसिस) के कारण होता है जो फेफड़ों को सबसे अधिक प्रभावित करता है।

- टीबी एक संक्रामक रोग है जो एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में खांसी, छींकने या थूकने के दौरान हवा के माध्यम से या फिर संक्रमित सतह को छूने से फैलता है।
- इस रोग से पीड़ित व्यक्ति में बलगम और खून के साथ खांसी, सीने में दर्द, कमजोरी, वजन कम होना, तथा बुखार इत्यादि के लक्षण देखे जाते हैं।

स्रोत: इंडियन एक्सप्रेस

PDF Reference URL: <https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/india-tb-report-2020-1>

